#103
बारहवां साल
(मक्की दौर)
पोस्ट: 06

बारहवां साल (मक्की दौर)

पहली बैअत

- सन 11 नब्वी: हज के मौक़े से खज़रज के छह(6) आदमियों ने इस्लाम क़ुबूल किया था और रसूलुल्लाह ﷺ से वादा किया था के अपनी क़ौम में जाकर दीने इस्लाम की तब्लीग़ करेंगे।
- सन 12 नब्वी: हज के मौक़े से मदीना से 12 अफ़राद आप ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए।
- उन लोगों ने रसूलुल्लाह ﷺ से मिना में एक अक़बा (घाटी) के पास मुलाक़ात की, आप ﷺ से चंद बातों पर बैअत की, इसको पहली बैअत अक़बा कहते हैं!

To subscribe, please visit:
www.understandquran.com/dailypost

#104
बारहवां साल
(मक्की दौर)
पोस्ट: 07

बारहवां साल (मक्की दौर)

अस्बाक़ व अमल

(पहली बैअत)

- क़ौम के बड़े और ज़िम्मेदार लोगों को दीन की खिदमत के लिए आगे आना चाहिए; ताकि उन्हें देख कर आवाम और ख़ास कर बच्चों में नेक काम करने का शौक और जज़्बा पैदा हो!
- खुद में दीनी ग़ैरत और ईमानी क़ुव्वत पैदा करें। अपने अखलाक़ को बेहतर बनाएं ताकि दूसरे लोग भी इस्लाम को सही तौर पर समझें!

UNDERSTAND AL QURAN ACADEMY

To subscribe, please visit:
www.understandquran.com/dailypost

#105
बारहवां साल
(मक्की दौर)
पोस्ट: 08

बारहवां साल (मक्की दौर)

हज़रत मुसअब रज़ि़य० मदीने में

- हज के बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने इस्लाम क़बूल करने वाले मदीना के लोगों के साथ हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि़य० को दीन की तालीम देने की ग़रज़ से भेजा!
- हज़रत मुसअब रज़ि़य० मदीना में हज़रत असद बिन ज़ुरारा रज़ि़य० के घर उतरे और दोनों ने मिलकर इस्लाम की तब्लीग़ शुरू की!
- उन दोनों सहाबियों की तब्लीग़ के नतीजे में बहुत कम वक़्त में मदीना में मुताद्दिद लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया!

To subscribe, please visit:
www.understandquran.com/dailypost

#106
बारहवां साल
(मक्की दौर)
पोस्ट: 09

बारहवां साल (मक्की दौर)

अस्बाक़ व अमल

(हज़रत मुसअब रज़ि० मदीने में)

- बेहतरीन सलाहियत पैदा करें और अपनी सलाहियतों को दीन की ख़ातिर इस्तेमाल करें!
- इस्लाम का पैग़ाम पूरे शौक़ व जज़्बे के साथ दूसरों तक पहुँचाएं!
- क़ौम को दीन सिखाएं और क़ुरआन की तालीम दें और शिर्क से दूर रहने की तल्क़ीन करें!

UNDERSTAND AL QURAN ACADEMY

To subscribe, please visit:
www.understandquran.com/dailypost

#107
तेरहवां साल
(मक्की दौर)
पोस्ट: 01

तेरहवां साल (मक्की दौर)

दूसरी बैअत, 72 से

- सुन्नत 13 नबवी: मदीने से 72 मुसलमानों की हज के लिए मक्का आमद हुई!
- आप ﷺ ने उन से जो बातों पर बैअत ली, उनमें से चंद ये हैं:
  - चुस्ती और सुस्ती, हर हाल में बात सुनोगे और मानोगे,
  - तंगी और खुशहाली, हर हाल में खर्च करोगे,
  - भलाई का हुक्म दोगे और बुराई से रोकोगे,
  - जब मैं तुम्हारे पास आऊं तो मेरी मदद करोगे, और जिस चीज़ से अपनी जान और अपने बाल बच्चों की हिफ़ाज़त करते हो उस से मेरी भी हिफ़ाज़त करोगे,
  - और तुम्हारे लिए जन्नत है!

UNDERSTAND AL QURAN ACADEMY

To subscribe, please visit:
www.understandquran.com/dailypost

तेरहवां साल (मक्की दौर)

अस्बाक़ व अमल

(दूसरी बैअत, 72 से)

- बैअत की हर बात की रौशनी में अपने आप को जाँचिए!
- हिजरत की स्प्रिट और मक़्सद को याद रखिए!
- रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '...मुहाजिर वह है जो उन कामों को छोड़ दे जिन से अल्लाह ने मना फरमाया!' (बुखारी: 10)

#109
तेरहवां साल
(मक्की दौर)
पोस्ट: 03

तेरहवां साल (मक्की दौर)

हिजरत की इजाज़त (आम मुसलमानों को) (1)

- मुश्रिकीने मक्का के ज़ुल्म व सितम की वजह से मुसलमानों के लिए मक्का में रहना मुश्किल हो गया था!
- अब मदीना में इस्लाम परवान चढ़ने लगा तो दूसरी बैअत के बाद आप ﷺ ने मुसलमानों को मदीना की तरफ हिज्रत करने की इजाज़त दे दी और अहले ईमान आहिस्ता आहिस्ता हिजरत करने लगे!

तेरहवां साल (मक्की दौर)

हिजरत की इजाज़त (आम मुसलमानों को) (2)

- सहाबा-ए-किराम ने हिज्रत की ख़ातिर बड़ी क़ुर्बानियाँ दीं!
- किसी को घर-बार, माल व अस्बाब छोड़ना पड़ा तो किसी को तिजारत और कारोबार, रिश्तेदार, बाप, भाई, बीवी और बच्चे वगैरह!
- मगर वो ख़ुश थे के अब मदीना जाकर पूरी आज़ादी से एक अल्लाह की इबादत कर सकेंगे!

तेरहवां साल (मक्की दौर)

अस्बाक़ व अमल

(हिजरत की इजाज़त (आम मुसलमानों को)- 3)

- अल्लाह के नेक बंदे अपने ईमान की हिफ़ाज़त की ख़ातिर हिजरत करने से भी पीछे नहीं हटते हैं!
- हर दौर में दीन-ए-हक़ की ना सिर्फ़ मुख़ालिफ़त की गई बल्कि सच्चे दीन के मानने वालों को मुख़्तलिफ़ तकलीफ़ों का सामना भी करना पड़ा, मगर आख़िर कर हक़ ग़ालिब होकर रहा!